महोत्सव में पधारे सभी अतिथियों का

सौधर्म इन्द्र परिवार

हार्दिक स्वागत वंदन अभिनंदन करता है।

श्रीमती मबोरमा-जितेन्द्र जैन
सौधर्म इन्द्र

श्रीमती सुभद्रा कुमारी जैन
(माताजी)

श्रीमती सुधा-जैनेंद्र जैन
माहेन्द्र इन्द्र

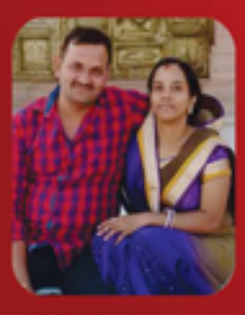

श्रीमती शिखा-इंद्रसेन जैन

श्रीमती विकिता-अर्पित जैन

अंकित जैन

अंचल जैन
लोकांतिक देव

सिद्धार्थ जैन
नेमीकुमार

यथार्थ जैन
लोकांतिक देव

श्रुति जैन

निपुण जैन

प्रेम पत्र – तंबाकू का हम सभी (इंसानों) के लिए

मैं आपकी तंबाकू, मेरा बांटने बॉटनिकल नाम निकोटीन टोबेकम है, और मैं एशियन टाइम से लगभग 1400 ईस्वी सन से इस पृथ्वी पर एक वनस्पति की पत्ती के रुप में पाई जाती हूं। शुरू-शुरू में इंसान ने मुझे पहचान कर एक दर्द निवारक औषधि के रूप में उपयोग कर मुझे अपनाया और दांतो के दर्द के लिए उसने मुझे बहुत ही उपयुक्त माना, इस तरह इंसान मेरा उपयोग एवं उपभोग करने लगा, इस सबके चलते कब वह मुझ से प्रेम करने लगा मुझे पता ही नहीं चला ! मैं मनुष्य के इस तरह से होने वाले प्रेम से अभिभूत होकर स्वयं पर बहुत इठलाने लगी।

प्रेम तो नितांत एक नि:स्वार्थ, निश्चल मन की भावना होती है मैंने देखा स्वार्थी इंसान इस तरह मुझसे निस्वार्थ प्रेम करता है, मैंने देखा वह तो अपने परिवार, पत्नी, बच्चे, मां- बाप, दोस्तों से भी ज्यादा प्यार तो मुझसे करता हैं एक बार ऐसा लगा, ऐसा नहीं हो सकता है और यह विचार मेरे मन में आने पर मैंने इंसान के इस नि:स्वार्थ प्रेम की वजह जानने की कोशिश की और स्वयं का आत्म अवलोकन करने लगी और सोचा कि ऐसी क्या बात है मुझमें तो पता चला मुझमे निकोटिन नामक एक आदत बनाने वाला तत्व है जिसकी वजह से स्वार्थी इंसान मुझसे प्रेम करने लगा।

मैंने देखा इंसान का इस तरह से मुझसे प्रेम करने से उसका परिवार बिखरता जा रहा था, इस पर मेरी मानवीय संवेदना जागृत होकर इंसान के परिवार के बारे में सोचने लगी और फिर मैंने अपने दुष्प्रभाव इंसान पर छोड़ने शुरू किए, जैसे कि मुंह में छाले होना, मुंह में घाव हो जाना, छाले का ठीक नहीं होना, मुंह का नहीं खुलना, मुँह में कैंसर जैसी गंभीर बीमारी होना इत्यादि। इन सबके बावजूद इंसान का प्रेम मेरे पति कम होता दिखाई नहीं दिया और तो और वह मुझमें केसर मिलाकर, कभी इलायची का स्वाद डालकर, कभी खस की खुशबू मिलाकर मुझसे नितांत नि:स्वार्थ प्रेम करता रहा। मैंने इंसान को डराने के लिए अपने मोह से दूर करने के लिए यमराज देवता से भी दोस्ती कर ली और कई इंसानों का जीवन लील भी लिया, और कई इंसानो का जीवन चक्र भी कम कर दिया बहुत सारे नियम कानून भी बनवाए पर इंसान का मुझसे प्रेम कम होता प्रतीत नहीं हुआ, मैं बड़ी दुखी हूँ अपने इस कृत्य पर।

मैं इंसान से रुठती रही प्रार्थना करती रही कि मुझसे प्रेम ना करें इंसान से प्रेम करें, परिवार से प्रेम करें, दोस्तों से प्रेम करें पर इंसान का प्रेम मुझसे कभी कम नहीं हुआ जैसे कि 'दिल है कि मानता नहीं' प्यार है कि कम होता नहीं और तो और इंसान का प्रेम सोहनी-महिवाल, हीर-रांझा, लैला-मजनू जैसे प्रेमियों भी ज्यादा मुझसे प्रतीत होता हैं। मैं अभीभूत हूँ इंसान जैसे स्वाथी प्राणी का मुझसे इस तरह से निश्चल प्रेम देखकर ! पता नहीं कब इंसान के इस तरह के प्रेम बंधन से मुक्त होकर मैं अपने तरह से जी पाऊंगी। अंत में बड़े भारी मन से आपसे विदा लेने के भाव सहित इस वादे के साथ कि आप अब मुझसे ज्यादा अपने आप से, अपने परिवार से, दोस्तों से प्रेम करेंगे एवं स्वस्थ सुखी, प्रसन्न वातावरण का निर्माण करेंगे।

प्रेम त्याग की भावना का अनुसरण करते हुए मुझे तिलांजलि दें, विदा करेंगे।

– आपकी प्रिय तंबाकू

आलेख – डॉ. रुपेश मोदी, छाती एवं हृदय रोग विशेषज्ञ, इंदौर

नवदाम्पत्य की बधाईयाँ...

आयुष्मान शुभम

सुपौत्र: स्व. श्रीमती गेंदाबाई-स्व.श्री चन्द्रभानजी जैन
सुपुत्र : श्रीमती सुनिता-कैलाशचन्द्र जैन, इन्दौर

का शुभविवाह

आयुष्मति सुरभि

सुपौत्री : स्व. श्रीमती सरजूबाई-स्व. श्री दमरुलालजी जैन
सुपुत्री : श्रीमती माला-श्री सुदर्शनजी जैन, बांसी

के साथ दिनांक 18 अप्रैल 2022, को
गिरधर महल, इन्दौर में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।